

## महत्वपूर्ण बिन्दु

अंशिका  
रुड़की

### चार बातें याद रखें

- बड़े बूढ़ों का आदर करना
- छोटों पर स्नेह करना
- बुद्धिमानों से सलाह लेना
- मूर्खों के साथ कभी न उलझना

### शुद्ध साधना के लिये चार तप आवश्यक हैं।

- भूख से कम भोजन
- लोक प्रतिष्ठा के मोह का त्याग
- निर्धनता में समता
- ईश्वर की इच्छा में सन्तोष

### चार चीजें मनुष्य को बड़े भाग्य से मिलती हैं।

- ईश अनुरक्ति
- सन्तों की संगति
- चारित्रिक निर्मलता
- उदारता

### चार बातें अत्यन्त दुर्लभ हैं

- धन में पवित्रता
- दान में विनय
- वीरता में दया
- अधिकार में निर्भीकता

### चार चीजों पर भरोसा मत करो

- बिना जीता हुआ मन
- शत्रु की प्रीति
- स्वार्थी की खुशामद
- बाजारू ज्योतिषियों की भविष्यवाणी

### चार वस्तुओं का सदा सेवन करना चाहिये

- सत्संग
- दान
- सन्तोष
- दया

चार अवस्थाओं में मनुष्य बिगड़ता है।

- जवानी
- अधिकार
- धन
- विवेक

इन चार पर मनुष्य का वश नहीं चलता।

- जीवन
- मरण
- यश
- अपयश

इन चार से जीवन में बचें।

- नास्तिक व्यक्ति
- परनारी
- अन्याय का धन
- पर निन्दा

चार चीजों पर भरोसा रखो।

- सत्य
- स्वार्थहीन व्यक्ति
- पुरुषार्थ
- मित्र

चार चीजें जो पहले दुर्बल दिखती हैं, परन्तु परवाह न करने पर बढ़ कर दुख का कारण बनती हैं।

- आग
- ऋण
- रोग
- पाप

इन चार में मनुष्य का कल्याण निहित है।

- संयम
- अल्प आहार
- अल्पनिद्रा
- एकांत में भगवत स्मरण

### चार चीजें जाकर फिर नहीं लौटती।

- मुहँ से निकली हुई बात
- कमान से निकला हुआ तीर
- बीती हुयी उम्र
- मिटा हुआ अज्ञान

### चार बातों को हमेशा याद रखें।

- किसी के द्वारा आप पर किया गया उपकार
- आपके द्वारा किसी से लिया गया ऋण
- मृत्यु
- ईश्वर

### इन चार का वास्तविक परिचय विशेष स्थिति में मिलता है।

- दरिद्रता में मित्र का
- निर्धनता में स्त्री का
- रण में शूरवीर का
- बदनामी में बन्धु-बांधवों का

### चार प्रकार के मनुष्य होते हैं।

- मकखी चूस-जो न खुद खाये और न ही किसी को कुछ दे।
- कंजूस-जो खुद तो खाये पर किसी को कुछ न दे।
- उदार-जो आप भी खाये व दूसरों को भी दे।
- दाता-जो आप न खाये पर दूसरों को दे।

### मन की चार अवस्थाएं हैं।

- धर्म से विमुख जीव का मन-मुर्दा है।
- पापी का मन रोगी है।
- लोभी तथा स्वार्थी का मन आलसी है।
- भजन साधना में तत्पर व्यक्ति का मन स्वस्थ है।

### भगवान बुद्ध ने चार परम सत्य बताये।

- जीवन दुख पूर्ण है।
- इस दुख के कारण हैं।
- इस दुख को रोका जा सकता है।
- दुख निवारण उपाय भी है।

### सुखी होने के चार रास्ते

- काम में सदैव व्यस्त रहो व कम बोलो
- कभी-कभी ना बोलना भी सीखो।
- अपनी गलती स्वीकार करो।
- सबको सम्मान से बुलाओ।

### दुखी होने के चार रास्ते

- लेन-देन का हिसाब न रखना।
- किसी काम को समय से न करना।
- बिना कारण झूठ बोलना।
- स्वयं की बात को ही सत्य बताना।

